



१५ नमः श्री कृष्णाय ॥ श्री न
व्युवाच ॥ प्रणम्य श्रीमदङ्गानं स्वक
न्यम्य वमं वरं ॥ श्री कृष्णोवाच ॥
युक्ते यवमानन्य नदिती ॥ नैव व
नैव वीचा रुच्यवतल लयंगता ॥
दीकासाशो रुनीतानी नवा ॥
याग कंदेनी ॥ यधमैसमय दी की
दिता यश्रवलि वृकी सदाधिक
नदी कालु निर्वोलाश्रु नीयकी
मनुष्याणां हितार्थं यदीकाक
ममिदं स्मृती ॥ सकृज्जमा कृती
पापदी कामरुणनाशनं ॥ अ
युः ॥ काकि सोमार्थं लक्ष्मीपुष्टि
विवर्द्धनं ॥ अष्टौ च यश्रववर्त
सर्वसिद्धिप्रदायकं ॥

अथ दीकाय नियति ॥ अष्टौ क
वमे ॥ अष्टौ युजा द्वाय ॥ वा ॥ य
जमानस्य समयवनिष्टु दीका
रुच्यनिर्विष्टु वलाश्रु गलाय
गवाधन निमित्तं यधुष्यराज
समयं यामि ॥ ग्वउजा च रुम
दक्षिणादयकं द्वाय ॥ ॥
अष्टौ अष्टुयीति युजा अष्टा
१० युजा ॥ वा ॥ यजमान
नमयवनिष्टु दीकाह गति
कामार्थं मष्टुयीति युजा नि
॥ यधुष्यराज नमं मयं य

मि ॥ यष्टुमाष्ट दक्षिणासमयजोद
यकं ॥ दीकाकाय कृते नमाल्थ
उत्तं नलायाव यीपोस युजा योय ॥
सकलं यीथियानाम न कलानतु
दाव ॥ अथ यन शिष्य सकलसन ॥

अनर्हति मदीयमाल ॥ ॥ अत
सीतिमभिवाम नद्विद्य ॥ नु नूपरु
तिसकलसं कृवन्ना नादिषु विव
उततियाव नित्यकर्मधूनकाव ॥

यवस्तस्मानादियन्तन सिद्धवद
ष्टिकर्तुयताकादिय जमष्टुम
रुत्तान द्वायाव ॥ शिव लिय शैव
लिने वल ग्वउजावाय कलगाकुरु
वलिमाले कथापर्यं ॥ ॥ मयं ज

यकलयाश्रवदास जिलाभायन
जलस्तानय शरामृगजु लिस्तानय
दाव चन्दन सिद्धवदष्टि नकव
मुनयासीयष्टु माष्टु द्वाय क
ताका अष्टुवाय जमस्तानतल
यष्टुवासन अष्टुपदायाय
हालीकसखनयय ॥ अलिना
ये ॥ ॥ जिलायाश्रवस शिष्य

थायनं स्नानादिषु वव ॥ रुत्ता
तवस्तुनायाव यष्टुवास
आयमायस्ताला वर ॥ दा
यताय जलद्वयादिषु
नर्गखयानधमसा

कां पु पुसादन जायत वृद्धि नूत
 मा। खे लां दं दलि गं नत से पीणु
 नय नमः॥ ययु सवें समुत्त नयन
 सवें कुर्यं गतं। यस्मि नयति हितं
 सवें तस्मै पुन व नमः॥ यनमा
 कयदा गो वं ससा नया लकु दक। न
 वंद सवर्ण दाता तस्मै पुन व न
 मः॥ ज्ञान ल कि समो वृद्ध तत्व मा
 ला विरु धितं कु कि मु कि प्रदाता न
 पुन व नय यथा निवी। ययु वं कु च पु
 वं दृष्टा ता भू यत वास सं। सा कसु
 पुष्य पूरु च धृ त हसं पुन व नमः॥
 सकृ ज नो कर्त याय सर्व ध्या धि विव
 र्जितं। वक्र कृ प्रिय वा गु ल एका
 का व न व र्ज नं॥ ज्ञा कृ नू य म
 ना थ सिद्धा हं त्व त्य सा द तः। नामः
 भगवतं कृ त्वा पु रा ना व च न कृ नू
 मय गं भदि॥ नम स्का व याय॥
 नता पुन म पु ला अर्च नं॥ पुन व न
 मा ज न न या कय ॥ नं कु कि नि
 वं ति॥ ॥ पुन न भवा विना॥
 पूर्व क ठ रु म दा हि वृ त्ति ता सि व सु
 द वा। त द्वा ष ग म ना थ य सि श्र मि
 भवा विना॥ हस पु मा न न य पु न
 म पु ली का न य ॥ ॥ ल ग धि ता य
 वा य व ग ध वा वि सु ल धि ता। य
 कर्त या य दृ क र्त रू क र्त न

वं ॥ वृ द्ध ज न क र्त या य मे दि ज न म
 निय क र्त। सकृ ज न मा र्जि त या य त्व
 त्य सा द न मू द्य नं॥ क व य ॥ अ लि
 क त्वा न म थ क व य त सा। अरु व पु म
 गु ला वृ ति गु भो व पु वि दि न य ॥ य
 थ य वि वि ध का वा जा य त वि वि ध
 कू लं। त स र्व क म्य ता दि व न क लु
 नि व स र्व दा॥ ॥ म धु स लान नं॥
 वं कु पु न न म पु ला य पा य ॥ ॥
 वं कु ला हा। ला हा त सि य ॥ ॥
 य दू वा स न या य॥ स र्व ॥ वं कु
 रु व द्र य उ र ल खा हा॥ स्नान ख व
 लानि म पु ल दाय क व वा य ॥ ॥
 न व ल म कू ल कू ल म व लं कू दू रु
 दू ला हा॥ स्नान म पु ल दान स र्व ॥



संगनक्रमनः

नमो विद्यायी ॥ १० ॥ पुनः कृद्विकाम
 लुलविधिः ॥ यद्वा स नमः ॥ नद
 यर्क ॥ थका जति ॥ थद वन कर्मा
 र्वन संकृदितं ॥ थया कव ॥ द्रा
 नर्द स्वर्ग मलु ला र्वन ॥ ॥ ॥
 थादि ॥ यजमानस्य समयव नि
 वृदी काम ॥ यदान निमित्त थ
 कृद्विकाम लुल र्वन कर्मा
 र्ग्या र्ग्य नमः ॥ ॥ ॥ माहात्म्य कान
 ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शीर्षं वरुणाय नमः ॥ लखन हाय व
नन सिन्दूरयज्ञाय नमः ॥ श्री
यन तव भगवतः ॥ सिद्धिं वामदेहि
॥ दिव्यान्तर्वाकमालका तयाव ॥
ततः पूजनं ॥ धिं धूम ॥ लुं छुं द्या
युनमः ॥ छुं ह्यादि १० ॥ ॥ धन
॥ ॥ जेऊ नमो भगवति हस्तमला
ये कोणा ददयाय यथा तत्तायन
मः ॥ पूर्व ॥ ॥ जेऊ धुं कृत्तिकाये
कलहोपाये कोणा ॥ निवसन्
यतत्ताय २ ॥ दक्षिण ॥ ॥ जेऊ को
णो दुर्वर्गवलिखं दुर्गिखाये तज
स्तत्ताय २ ॥ उक्त ॥ ॥ जेऊ धात्र
ज्योतिषावा नाम रवीवद्वृथा
ये के कवयो यवाये तत्ताय २ ॥
यत्तिमः ॥ ॥ जेऊ कोणो मेरुका नि
काये को नय ग्याय ज्वाकोणत
त्ताय २ ॥ मध्य ॥ ॥ जेऊ किनि २
विष्टकाङ्गनाये दुः ॥ मृकायमव
तत्ताय २ ॥ ज्वा ॥ मयादि ४० ॥ गता
नैव उदिक ॥ ॥ धनदू ॥ जेऊ
नमो भगवति उद्वकाय २ ॥ मध्य
॥ ॥ जेऊ धुं पूर्ववकाय २ ॥ पूर्व
॥ ॥ जेऊ कोणो दुर्गदक्षिणवर्क
व २ ॥ दक्षिण ॥ ॥ जेऊ धात्र
ज्योतिषावा नाम रवीवद्वृथा
२ ॥ उक्त ॥ ॥ जेऊ कोणो मे
काये यत्तिमवकाय २ ॥

यत्तिमः ॥ ॥ किनि २ विष्टकाङ्ग
नाये यवाय नवकाय २ ॥ ॥ धन
नमो भगवते ॥ जेऊ मृगमिषु लायन
मः पायु ॥ जेऊ वन्दमलु लायनम
यायु ॥ जेऊ वक्रिमलु लायनमया
यु ॥ जेऊ जूखलुमलु लाय २ ॥ जेऊ
शीकृत्तिका मलु लाय २ या ॥ ॥
या ३३ लि ॥ जेऊ हं हं हं हं हं हं लि
पूर्वयायु ॥ २ ॥ ॥ शीकृत्तिका मलु ला
यवन्दननमः ॥ ॥ वं सिन्दूरं ॥ दम
कर्तयज्ञाय वीतकं रुले ज्वा ॥ पुद
नं पूर्वं तानुलं दक्षिणं नैवर्ग
धूर्गदीयं ॥ ॥ दं रुतपूष्यताम
लधूपदाय नैवर्ग्यादि संकल्प सिद्धि
नमु ॥ ॥ ततार्च ॥ ॥ शिवसंज्ञ
सुवर्णदितायाव ॥ ॥ उक्त ॥ द्वाला
॥ ॥ उक्त ॥ द्यादि ॥ यजमानस्य समय
वलिष्टदीकामन्त्राय दाननिनिमि
र्भं शीकृत्तिका मलु लाय ॥ दमर्ग
॥ हाणस्वाहा ॥ ॥ उक्त ॥ धात्रं दक्षिणव
लिष्टपूष्यमिवतामर्गं ॥ ॥ उक्त ॥ धात्रं
मयादक्षिणाय नमः ॥ ॥ ॥
॥ शिवं पूज्य नमस्तुते ॥ ॥ ॥ ज्वा ॥
॥ ॥ ॥ उक्त ॥ ॥ शीकृत्तिका मलु ला
य ॥ मलु लायनममृगमिषु तल
दायय ॥ रुद्रं व ॥ ॥ उक्त ॥ ज्वा ॥
लायनमानमः ॥ ॥

अंजलिया दावजा नूयुगलंरु
 नीनिधाय य०७॥ अंजुखलुम
 लुलाकारं॥ दुकावाहु खयादा
 ॥ म०॥ शुभा॥ ॥ मा० मानका॥ स० सा
 नरुयसीतं नुतुयुहं नरुलागत
 ॥ इ० ख० ॥ ॥ न० ग० ॥ मि० ज० न० मृ
 लुजवादिर्क० कि० म० लामनसावाः
 यामयासा विनिवदिता॥ तस्मा०
 त्वं कथयाद विमल सिद्धि पुदहि
 मं॥ अ० ग० धादि॥ नमस्कारं कृ
 त्वा॥ ॥ ज० व० लानमपुलपियाव
 खवनखानतमरुविम॥ ॥ उ० काय
 पुद्धिगवर्गमि० मु॥ १॥ ॥ उ० वाक्
 पुद्धिगवर्गमि० मु॥ २॥ ॥ उ० विरुपु
 द्धिगवर्गमि० मु॥ ३॥ ॥ उ० कायवाक्
 विरुसर्वमि० न० गवर्गमि० मु॥ ४॥
 खानविश॥ ॥ क० मा० मु० ति॥ त्वं
 गतिं सर्वगानां संकितं स्वयं वा
 यव॥ अ० क० क० व० ल० ग० न० इ० दृष्टा
 त्वं यव० ग० वि॥ वि० यालायनक
 लं य० य० लु० म० ग० व० य० ज० न०॥ तदमु
 म० व० स० धु० ॥ उ० क० य० ग० जि० ग० द० ध० वि
 ॥ ॥ क० ग० दा० त० न० पु० ल० वि० स० र्ज० न०॥
 म० पु० ल० वा० द० स० खानयानां शु० धु०
 द० ना० दि० जा० दा० व० य० द० य०॥ ॥ उ० पु०
 त्वं नि० स० न० क० य० म० य० स० न० न० य० त
 दा० पु० म० ह० सि० म० द० वि० दी० दा०

म० ल० स० सि० द्व० दं॥ ॥ स० दृ० दि० धि० य
 क० इ० व० न० द० व० क० द० न०॥ ॥ क० ल० र० ख
 म० पु० ल० स० त०॥ अ० म० म० क० ल० ॥ ॥ वा
 माना० मि० का० रु० ध० न० म० पु० ल० पि० उ० म०
 ल० स० दा० व० क० म० ॥ न० ज० म० वि० धि०
 नि० व० स० य० स० न० ना० मु॥ ॥ म० पु० ल० कृ
 सि० न्दु० र० ग० ल० व० ॥ ॥ ग० य० म० पु० ल० कृ
 नि० म० लि० म० धा० ल० कृ० त्वा० धी० लान
 दि० य०॥ ॥ उ० नि० म० लि० य० लु० य० न० म०
 ॥ रु० स० य० द० ल० य० नि० वा० य० म० न०॥ स० य०
 ला० दि० धा० य०॥ ॥ उ० नि० क० दि० का० म० पु० ल०॥

त० क० ॥ नि० धा० ल०॥ उ० ज० दृ० दि०॥ य० ज०
 मानस्यसमुयव निष्ठदी कामका
 यदानार्थं श्रीकृदिक श्रुती निवर्ण
 किरुदानकायुजा निमित्तार्थं श्रीत
 याया धानिम० ॥ उ० मा० हा० ध० ना० वा०
 ॥ य० ध्य० राज० न० स० त्वा०॥ ॥ स० न० म०
 रु० त० म० म० क० ल० वि० य० य० नि० न० ध० ह
 ति० वा० न० ज० न० र्क०॥ वा० दृ० ॥ उ० ज० म
 दि० ता० मि० या० मि० न्या० म० ग० ल० स० व० धू
 र्क०॥ य० ध्य० दृ० द० द० म० य० ॥ ॥ स० म
 स० य० य० दृ० म०॥ ॥ य० ध्य० राज० न०
 न० ल० दृ० ला० य०॥ नि० ध्य० धा० न० म० न० वा० म
 न॥ ॥ त० मा० पु० न० वि० द्या० यी० ॥
 सा० ॥ क० या० म० क० मा० इ० न० वा० य०
 ला० ध० ना० दि० क० कृ० त्वा० न० ल० क० न
 ल० ग० क० न० य० य० न० दृ० ज० यि० न

दवाचनया नि क० न०

जलमन्त्रं पंचामृतं भूलिङ्गानं चन्दनं सिद्धं
हस्तिं जम्बूपर्वीगपूष्यं ॥ सिलाका उकापगनपा
यावतः ॥ खतायकापगनपायावतः ॥ लम्पलव

ततामयपटपूजनं ॥ न्यासः ॥ ॐ
ह्रीं सः ह्रदयादि ५ ॥ अः सः नः ॥ य
द्वाः सः नः यः पायु ॥ नः जः कौं कौं मरु
काविकायै को नः नः यः पायु
॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ अः नः गीगमहा
सेववाय पायु ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं सः ह्र
दयादि ५ ॥ वलि ॥ धनमूडा ॥ जा
य ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ १० ॥ ॐ निनेयपट
ततादलुकायपूजनं ॥ कौं ह्रदया
यनमः ॥ ह्रदयादिषु कौं न्यासः ॥ सि
हासनाय पायु ॥ दलुसनाय पा
यु ॥ नः कौं दलुनाय पायु ॥ वलि ॥
कौं ह्रदयायनमः ॥ वलि ॥
नाय ॥ नः कौं १० ॥ नः लः वठकायव
लि ॥ १२ खाह ॥ नः वः वठकनाथा
यवलि ॥ १२ खाह ॥ धनमूडा ॥
ॐ निदलुकायपूजनविधिः ॥
अः कः नः नः ॥ नः यद्वाः सनाय पा
यु ॥ नः कौं कौं कौं कौं यः सः नः १२ खा
दि ॥ अः धानादि नः पूजा ॥ वलि ॥ जाय
॥ कौं कौं कौं कौं अः धानाद्याय कौं यः
१२ खाह ॥ १० ॥ ॐ निनूकनयूजा
युयं धूनिपूजा ॥ नः यद्वाः सनाय पा
यु ॥ कौं कौं कौं कौं कौं यः सः नः १२
खाह ॥ अः धानाद्याय पूजनं ॥ वलि ॥
पद्मवतीवजाय ॥ १० ॥ ॐ निधू

धूनिपूजनं ॥ ॥ लूडाकाय
लं पूजनं ॥ नः मूवः पुयः सना
य पायु ॥ वलि ॥ ॥ नः वः जगयद्वा
सनाय पायु ॥ वलि ॥ ॥ निपयदी ॥
अः धानिलायूजनं ॥ न्यासः ॥ कौं ह्र
दयायनमः ॥ पायु १२ खादि ५ ॥ ॥
नः यद्वाः सनाय पायु ॥ अः धानव
कवतीनि ॥ वलि ॥ कौं ह्रदयादिषु
कौं ५ ॥ वलि ॥ नः कौं सः वः जनका
रुन्येया ॥ नः कौं सः वः जनमाहने
या ॥ नः कौं सः वः जनजहनेया ॥
नः कौं सः वः जनसंविनीयायु ॥
नः कौं सः वः जनमः कः वः ॥ येव
॥ नः कौं सः वः जनकः कः कः दः नः
या ॥ वलि ॥ नः कौं सः वः निता
वः गनजामनि १२ खाह ॥ १२ खाह
ह ॥ वलि ॥ नः नः वः जः दः १० ॥ ॥ कौं
या निमूडा ॥ अः धानाद्याय वि
नः यद्वाः नः ॥ ॐ निनितायूजनं ॥

ततः १२ खाह पूजनं ॥ न्यासः ॥ कौं ह्रद
यादिषु कः नः ॥ नः वः वः ॥ लः य
या ॥ नः वः नः मः लः धिः यः यः यः
यः तासनाय पायु ॥ ॥ ह्रदयमः लः
यया ॥ नः ह्रदयमः लः धिः यः यः
यः तासनाय पायु ॥ नः यः निमः
लायया ॥ नः अः निमः लः धिः यः
यः कः यः तासनाय पायु ॥ नः यः

पृष्ठ ॥ १५

अः नः नः वः ॥

ॐ ह्रीं क्लीं धूम्रं लोहितं शङ्खं कर्णिकं यदया
वैश्विज्यं धूम्रं लोहितं शङ्खं कर्णिकं यदया

मनु लाय या॥ नैशाममलुलाधि
यतथंभीष्टवयतासनाय॥ नै
गकिमलुलाय या॥ नैगकिमलु
लाधियतथस्तदातिवयतासन
यया॥ ॥ नैऊआँआँशिख
वंगनकामय २ आँआँदूरुठस्य
हा॥ वलि॥ नैहं हया॥ वलि॥ व
कीनिमकुन॥ वलि॥ ॥ नैअधा
नायया॥ नैयत्रमद्यानायया॥
नैधानव्रूयायया॥ नैधानामुरवा
या॥ नैहीमायया॥ नैसीषणाय
या॥ नैवमनीया॥ नैचिवलीया
॥ नैचिवनायेया॥ साँददयादि५
॥ वलि॥ अधानाङ्गिणवलि॥ शिख
यामूलविज्ञानजाय १०॥ यद्गर्ग
स्वमुद्रा॥ ॥ तिर्गिस्वपूजनी॥ ॥

धनवत्तमाल ॥ धूपदायनेवद्या
दिजयसो गय यन्तु नकाव ॥
चिवनेयद्यगुलयदेवासनवा
भाव ॥ गुणगुनीर्त्तलिष्टा लेश
धाराधर्मासावसान ॥ निर्मकु
र्त्त ॥ न किंति विवृकाकृतायेक
मृत्तायश्च ॥ ३ ॥ वलि। दूतसर्व
विष्णुकृष्णवलिगृह २ स्त्राहा ॥
दार्प। मर्त्तनिलयायादिधर्म
नार्थप्रिददात्तमः स्त्राहा ॥ १
नृकृष्णव ॥ ७ ॥ ॥ मृत्ति
महलकासुलादिनलाय ॥

॥ १० ॥ अथ मानका ॥ अथ गन्धादि ॥ १४ ॥

आसंवल्लि ॥ ॥ तत्तामुद्रा ॥ लिख्य
 णाधनं ॥ निवाचम्य मुद्रा नमस्तन
 न्यासाद्ययामुद्रा ॥ तद्गलनलिख्य
 लिख्य ॥ तदनकद ॥ वतीलीन्या
 मनःसाधय ॥ ॥ जैनभातग
 वगिहत्कमलायै काददयाय न
 मः पायू ॥ निखास ॥ धनविन्दुस
 २ ॥ द्वाद ३ ॥ नासो ४ ॥ मुद्रा ५ ॥ जा
 नो ६ ॥ पादो ७ ॥ मूलष ८ ॥ नरु
 लो ९ ॥ धनं धाय सः साधनयाय
 ॥ ॥ लिख्यायाभालस ष ९ ॥ नत्वा
 नमन ॥ आवा रुनादिया निमूडा ॥
 मूधुविगलनः साधय ॥ जैनको
 को को को को आत्मगत्वाय ययाय
 आधाय पायू ॥ आधाय ॥ जैनको को को
 रुद्र विद्या गत्वाय मूधुनाय नासो
 पायू ॥ नासो ॥ जैनको निवतत्वाय य
 नाय नाय मूद्रि कानं यायू ॥ क
 नस्तानं स्तानं स्य ॥ ७ ॥ निमित्तत्वं ॥
 ययतत्त्वं नः साधनं ॥ जैनधुतात्वा
 धिकाय निखास्तानं यायू ॥ १ ॥ को
 आय गत्वा धिकाय विन्दुस्तानं या
 यू ॥ २ ॥ जैनको कत्वा धिकाय द
 स्तानं यायू ॥ ३ ॥ दुर्वायूतत्वा
 धिकाय नासो स्तानं यायू ॥ ४
 ॥ को आकाशगत्वा धिकाय मुद्र
 स्तानं यायू ॥ ५ ॥ जैनको गत्वा धि
 काय जैनको यायू ॥ ६ ॥

[illegible]

मनु उच्यते विद्यया ॥ मित्र न इव
साजवद्गमस्यार्थम् ॥ मित्रा इव सा
खेवद्गमसम् ॥ ॥ मनु उच्यते ॥ इति
लिख्यते लयाद्यथा ॥ समय
इव साधनम् ॥ ॥ वनिष्ठतर्पण
नसा ॥ इति सिद्धि वाम् ॥ पुष्प
स्वाहा ॥ धमनेन लिख्यते यथा
शक्ति जाययाय ॥ ॥ धन लिख्य
वगुन्युक्तियुक्त नैदकिणार्क
॥ धन न लिख्यते गुणानि धनं वि
याव निख्यते यथा नयावकृष्ण
य ॥ ॥ धन दवर्क मालकाधुन
काव वीवभनक समया नैदुयार्क
वल किं इव दव लिख्यते धनं यथा
मत्त किं यथाय ॥ काल साधु गुलि
लाय ॥ स्वानत वाहा नैव ॥ इति
॥ ॥ इत्युक्तान् लासादाय कीलख
ग ॥ अथानादुमकुण ॥ ॥ इति तम
नैव कात ॥ अथुमकुण ॥ वायन
दीयर्क ॥ ॥ इत्युक्तान् लासादाय
वकाणकलयतय ॥ धनं यथा
नकल साधु ॥ धनं यथा
दीयर्क यथाय ॥ इति तम
इत्युक्तान् लासादाय ॥ नकल नैव
नादिमं यथा ॥ ॥ इति तम
इत्युक्तान् लासादाय ॥ नकल नैव
नादिमं यथा ॥ ॥ इति तम
इत्युक्तान् लासादाय ॥ नकल नैव
नादिमं यथा ॥ ॥ इति तम

[illegible]

दागादीसर्वजललागली। ताल
 वृक्षमलुकवृक्षलासंकुक्ष
 नी। कर्ककिलकं गृध्रमेव
 लाधविजवक। मातृद्विव
 लावकारवसुसधाविग। यासा
 दधवगात्रनः स्वयंप्रतिमवव
 । किमिकीटपतंगानि दूनाधान
 वदगति। निवश्रुदधयुर्वयं न
 नृमृककलिनीमदिवधवय
 र्नावधवधनमवव। स्वयंमृग
 मृतद्विष्टावितामध्वमकिव। जू
 तिरावृषिगात्राश्वनाकसारुतज
 मवा॥ प्रगानिहप्रदृष्टानिनिधि
 ज्ञान्यपुरुनिवे॥ धूमिलवद्वं॥

[illegible]

योद्यप्युपराजनीत्यु (१७) वा
का॥ यजमानस्यप्रामेक्षणीय
प्रिमज्जानुज्जामायकृत्ति
कम्पकृत्तिकम्पवीरुहाविका
समयवगिषदीकामिणायदान
निवागिषवमणादिपूजा निमि
त्यर्थ॥ निष्पन्नपूष्यराजनगु
वर्तकाय॥ निष्पन्नयानमम
नायिकायमालनिष्पन्नश्रवा॥

तत्तागुनूणाविद्यायी (७) सा (७) अ
यागदवाचनं॥ यंयवलि (७)
धनादिकं कलशकृम्ययार्क
कमार्जनविधिर्थाय॥ ॥
नंगयदुःश्रुतयद्मधूपनि
लागिषवपूर्वककुम्भलससम
कुलपूजनं॥ वलिमूलजयका
गादिपयार्कधूनकावधनलि
गुवृहविष्णुलासानरुनिष्पत्त
॥ गीर्तवर्कति॥ लखधानथर्क
विद्यायीतिर्दसावर्कयद्ममणु
लसमानं॥ ॥ निर्मकृत्त॥ स
पयनेनवाचकमकुल॥ ॥ व
ले॥ मृगपुल्ल॥ गद्ययवहिः
क्रिय७॥ ॥ मृदिलारुलका
॥ उयकृत्त॥ लिखा नयस्वाहा
॥ निमिषदिनिवसि॥ ॥

लारुलका॥ कौंभामतत्वायस्व
हा॥ कौंविद्यातत्वायस्वाहा॥ कौं
निवतत्वायस्वाहा॥ नाहोददि
मृद्धि॥ ॥ सगुणनत्वायभक्त
यततयाव॥ ॥ निष्पन्ननिमि
लाधय॥ जूम्भमकुलयाकल
॥ मूलननिमोदकं॥ कवचना
वगुणनं॥ जूम्भलेवगातनं॥
॥ निवगुःसंकात॥ मूलवत
॥ नयजनी॥ धनमूडा॥ ॥
थननयपठननिष्पन्नगव
धनं॥ मकु॥ ॥ कौं कौं मरुका
विकायैकौंभङ्गयायवव
ठ॥ ॥ निष्पन्नालारुलसव
तेनस्वस्तिकवाय॥ धनमकु
लदध्वनियाय॥ निजहंरुनवा
लागुनमकुलायचाइकी॥ पू
ष्या७॥ निषायक॥ ॥ निव
लान्यामनलाधनं॥ निजहं
जूम्भवास्यानमःचाइकी॥ कौं
तज्जनीस्यानमःचाइ॥ लुंमय
मास्यानमःचायू॥ वंजुनामि
कास्यानमःचा॥ यंकनिष्पत्त
नमःचा॥ उंजुमाययूटया
॥ निजहं निखाकोनयायू॥ स
निवस्तानयायू॥ ललोटा
यू॥ मवकागुलायय

लेंद दयाय नमः पायू ॥ वें ना
हो पायू ॥ वें गुच्छ पायू ॥ यें जा
नो पा ॥ उें पाद दय पायू ॥ कु
लान सुान २ सु ॥ ७ ॥ जू ॥ य न
व द्य व लि ॥ ॥ नें ॥ सु ॥ सि द्वा
ये पाद दय पायू ॥ सु ॥ मु द्वा
ये जानू दय पायू ॥ सु ॥ वि द्य
गाये उ नू दय पायू ॥ सु ॥ ले
॥ गुच्छ पायू ॥ सु ॥ दी का ये
ना हो पायू ॥ सु ॥ मा नि नू द द
या ये पायू ॥ सु ॥ नि वा ये क
॥ पायू ॥ सु ॥ वे स मू खा ये मू
ख पायू ॥ सु ॥ ना सा वे मा ये ना
सायू ॥ पायू ॥ सु ॥ क दे का ये
क ॥ उ द ये पायू ॥ सु ॥ रु नि क
गाये गुच्छ पायू ॥ सु ॥ म हा मू
ख नि नू म पायू ॥ न वें व लि ॥
॥ ॥ नें ॥ सु ॥ सर्व सु गा ये द
दया ये पायू ॥ सु ॥ मू मू त न
आ मा ल नी ति पि गा नि नू म
स्वा हा ये पायू ॥ सु ॥ अ व द व द नी
मू ना दि वा ॥ सु ॥ य नि खा ये वो
ध ट पायू ॥ सु ॥ व जि न व द ध
ध नी य स ग ले क व रा य दू पा
यू ॥ सु ॥ ना ना नि ह मू ल क म
॥ सु ॥ ल नि न ग वू पा ये व व

ठ पायू ॥ सु ॥ न म मू र्य मू न
ने ग कि ली दू म हा पा गु य र्त्
मा य स रु मा का य म मा य
रु ट पायू ॥ सु ॥ व लि ॥ ॥
नें ॥ ने मा रु ग व ति द ल म ला
य ति ष उ ॥ न नि वा नि व सि
यू ज न ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ आ म त ला
य व द्म ॥ पा द का ॥ आ धा न
॥ ॥ ॥ वि द्या त ला य वि द्म व पा
यू ॥ द दि ॥ ॥ ॥ नि व त ला य स
दा नि वा य पायू ॥ नि व सि ॥
सं हा न क म ॥ ॥ ॥ पु न मू षि ॥
दू नि व त ला य स दा नि व त ला
य पायू ॥ नि व सि ॥ ॥ ॥ वि द्या त
ला य वि द्म व पायू ॥ द दि ॥ ॥ ॥
आ म त ला य व द्म ॥ पायू ॥
आ धा न ॥ ॥ सु ग म्भ व न्द न
न नि वा रु क्त व लि क ति र व ॥
॥ सु लि क पू ज य ॥ ॥ नें ॥ आ म त
ला य न म ॥ ॥ नें ॥ वि द्या त ला य
न म ॥ ॥ नें ॥ नि व त ला य न म ॥ ॥ नें
ध मा य न म ॥ ॥ नें ॥ ध मा य न
म ॥ ॥ नें ॥ नि वा य २ ॥ ॥ नें ॥ क थ ॥
॥ ॥ नें ॥ रु ल सें ॥ ॥ नें ॥ न मा रु
ग व ति दू क्ति का ये दा ॥ ॥ ॥
दू धा व ॥ ॥ आ धा न मू र्खी का
॥ ॥ ॥ कि नि कि नि दि दू पायू ॥ ॥

मालिनी हृदयाय पायू ॥ नूँ
मालिनी निवसं खाहा ॥ नूँ
मालिनी निखाया पायू ॥ नूँ
नूँ मालिनी कवचाय दूँ ॥ नूँ
नूँ मालिनी नगयाय वषट्
ट्पायू ॥ नूँ ॥ मालिनी मूत्राय
रुट्पायू ॥ वलि ॥ ॥ शुद्ध
नामिनामै नमो नूँ ॥ श्री हृ
दयाय पादुकां ॥ श्री मूत्रि
नसं खाहा पायू ॥ श्री निखा
यवषट्पायू ॥ श्री कव
चाय दूँ पायू ॥ श्री नग
याय वषट्पायू ॥ श्री मू
त्राय रुट्पायू ॥ वलि ॥ ॥
को नूँ ॥ श्री ध्यात्र दूँ श्री ध्याया
य निवसं पायू ॥ को नूँ ॥ पद्म
नाम दूँ श्री पद्मनाभायै नमू
खे पायू ॥ को नूँ ॥ श्री ध्यात्र दूँ
को श्री ध्यात्र दूँ हृदयाय
पायू ॥ को नूँ ॥ श्री ध्यात्र दूँ
ध्यात्र मुखायै नमो नमू ॥
को नूँ ॥ श्री रुट् हीमनामायै श्री
पायै दक्षिण रुज पायू ॥ को
नमो नमू ॥ श्री ध्यात्र दूँ श्री
पायू ॥ श्री को नूँ ॥ वम
म वाम नमू दक्षिण नमू
पायू ॥ श्री रुट् पिवह श्री चि

[illegible]

[illegible]

॥ गोविन्दसङ्केतस्य द्वादशपिण्डस्य वृक्षलीक्षणस्य ॥

लं क्लाय गुणद्वन्द्वनैव यथा
थायसीत ॥ निष्प्रयाला
हानसंयुजनं ॥ नवात्मा षष्ठं
न ॥ हृदयदि ॥ मूलषष्ठ
मि ॥ निजनमारुगतिहलेमला
यदि ॥ ॥ निष्प्रालंखधन
थस्यलामालाव खदातायिनं ॥
दहलीसकमात्रिनसंयुजितया
व ग्वयदक्षिणातयकं थियकं
न ॥ धननिगहानुगहयाचकं ॥
॥ वाक् ॥ ॥ मुदि ह्यचन्द्रावनि
लाननश्च शीर्षमिवाया हयय
यमथ ॥ मुरुप्रवालिप्रउरुच
संश्च यमश्च जानातिनवस्व
रि ॥ मालकासावलपयकं ॥
यतः सस्यतताल श्रीर्यताल
श्रीसुताहनिः ॥ यताहविकृता
धर्मः यताधर्मसुताजयः ॥ ॥
कमसगुणलियाचकं ॥ निजसं
हपायु ॥ ॥ मुदि नमस्कात्रया
चकावकाय ॥ ॥ धनखदग
सातयकं गुणनिष्प्रालंखधन
नेथस्य दिद्यापीठिद्वयाद्यन
॥ ॥ मालकासंनजानाविय ॥
॥ गकन ॥ ॥ वाक् ॥ ॥ श
वेष्वव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दानं ॥ धनमनंश
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दयाशनसा सुखं वेष्वव ॥
गमनुप्रदानं धनं गुणलि
क्यायकं ॥ निवसंशुदिन ॥ ॥
धनं धनकावयुनः प्रदानं ॥
नैकाजीशुं शोभो ज्ञानन्दन
किरेन ॥ वान नैन्दवानाधि
यतयं मुमिहा वृविद्यावाज
श्वरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मनु ॥ ॥ निजमृदात्रिकां
थयानं कांथानधानेनकनं
॥ सर्वतः सर्वसर्वं कांशः सर्वं
नृद्वयपदः पायु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नैजं नैवकाकुडिनीशुं लला
कर्षलाकां कामाङ्गुदावना
कांशमहाकातकाविनिनै
सः पायु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वनिशुं कुडिकायेकांशोका
नैजं नैवकाकुडिनीशुं लला
कांशमहाकातकाविनिनै
सः पायु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नालि ॥ ॥ धनमनुवनिशुं ॥ ॥
मिजनशनसाजसयातसक
न ॥ मिसाथारवस ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जलिक्कायकं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वनि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कोनगय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गुन्यागदक्षि

निष्ठा नगुञ्जलिहकयाचक
॥ मालका समय काय ॥ ॥
धकूङ्गवलिह्वायमतेनि ॥ अ
र्घपात्रोदकं नाहिषकचन्दन
सिन्दुनादिज्वाणीवदि ॥ समय
राष्ट्रमालकधनकं ॥ धनेसकि
अथयुथोकर्म ॥ दवस्कस्ताना
दियन्दनसिन्दुनयजामयुष्यका
य ॥ मालकवलिह्वायानेसाय ॥
युधमसे निष्ठा नि निष्ठा अने
कागनलयाचक इवने ॥ ध
नयिवने दवा अने तोन वाचक ॥

पूजा राजन ॥ अथ आदि ॥ यज
 मानस्य जीमकुलीयश्चिमजश्च
 नूजश्चास्त्रायकजश्च नीलिवण
 कित्टारिकासमयवनिष्ठदाः
 कामकायदानसंपूर्णकर्म
 दद्यच्चैननिमित्तार्थवाक् ॥ ॥
 पुनरुपविद्यापीठसयथाविध
 ननकमार्चनमात्रहस्तधना
 दिपश्चरवति सांगायकद
 वाचनकलङ्ककृष्णयज्ञ
 यज्ञाद्यमाहा मायमुक्ति ॥ ॥
 समयवायव्यवस्तुर्षा ॥ ॥
 यत्तत्तर्षाकोमात्रीजागर्चन
 मदिक्कोमात्रीविसर्ज
 वेद्यापीठसदवाणा
 यावालेविसर्जन

॥ ॥ स्वस्तिकथास्यं निवृत्ता
नं ॥ क्रमकननस्यं कलशादि
धर्कं ॥ वन्दसिन्दुनसगुलभा
रुनीज्जालीवोद ॥ ॥ क्रमक
नसाय ॥ यनवीनकललजम
ननमकारिकावयित्वा ॥ सम
यदातथा ॥ जै ॥ वक्राणीष्ट
कायवन् ॥ समयसुखेण ॥
यथागकिसिद्धिकनकान् ॥
ॐ गिणीमकुलीयविमान्ना
यसमयवनिष्टदीकाविध
नसमाकमिति ॥ * ॥

१. अथ नृणां नवमूर्त्तिविधौ
 लुमाग्यां मासं शुक्लं नृनां दि
 वसंति नार्याः । द्वाका विधीनम
 लिखद्विजनामरुद्राः शुद्धाक
 रं यदि रुवंत्यत्रिणाधनीयं ॥

[illegible]

五上四世法王如意寶金剛持

रुद्रप्रभुनयद्वुक्तादिदिगदं दगनर्थे वा नोदासादि

यावत्प्रसात्तजिगत्तमावत्, ५५ याकलानरुवरापेत्तव, ५६

不期而

सायवानलधूजाद्यानादथवनिनसायुष्याभिलिङ्गं । नैक

५६३ गोपबन्धु

॥ गङ्गा नदी का नाम गङ्गा मन्दिर स्थित ॥

॥३॥ नमोऽस्तुते

॥ वास्तुशिल्पशास्त्रे ॥ अथ वास्तुशिल्पशास्त्रे ॥

सत्त्वगामयुल्लसं सिसृक्षुश्च नगसे नमगुत्रवनेरे नर्दंती कुञ्जरी ॥ ५५ ॥
 यापु ॥ ॐ दर्दनेव दर्दवलिं नृक २ खाहा ॥ ५६ ॥ नमस नपापु ॥ ५७ ॥ काँकी कुंक्षु २
 वलि ॥ ५८ ॥ मयूनासनपापु ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥
 मूना १८ ॥ नोती कलगा १८ ॥ यमाय पापु ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥
 नंऊ संसंकदयाय नमः ॥ ६१ ॥ मि न्यास ॥ ६२ ॥ यमास नपापु ॥ ६३ ॥ नंऊ शावाशन पापु ॥ ६४ ॥
 संवदनावर्कसि लावनी ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥
 गपृथं नवात्म नमः ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥
 यम ॥ नवात्म नमः ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥
 यम ॥ नवात्म नमः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥
 यम ॥ नवात्म नमः ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥
 यम ॥ नवात्म नमः ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥



न॥ इति या नि मृगय क० ॥ ॐ स्वाहा या नृ क० ॥
 न॥ नृ क० ॥ इति नास्ते ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥
 यास्तु वनाया दव क० ॥ इति नास्ते ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥
 अथ या नृ या दव नृ थम रुपाय ॥ ॐ ति रु नृ थु हि ॥ ॐ ॥
 नृ नी पाय ॥ इति मृ क० ॥ पाय ॥ इति सि नृ नी पाय ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 थव नि नृ मृ नृ गण नृ र्थ ग या य ॥ नृ स्वा रु पा ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 या मि नमः ॥ नृ स्वा रु पा य नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 या नृ नृ ग र्थ या मि नमः ॥ नृ स्वा रु पा नृ र्थ या मि नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 मृ ता धा नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 रु प नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥

नृ क० ॥ इति नास्ते ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥
 यास्तु वनाया दव क० ॥ इति नास्ते ॥ इति क० ॥ इति क० ॥ इति क० ॥
 अथ या नृ या दव नृ थम रुपाय ॥ ॐ ति रु नृ थु हि ॥ ॐ ॥
 नृ नी पाय ॥ इति मृ क० ॥ पाय ॥ इति सि नृ नी पाय ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 थव नि नृ मृ नृ गण नृ र्थ ग या य ॥ नृ स्वा रु पा ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 या मि नमः ॥ नृ स्वा रु पा य नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 या नृ नृ ग र्थ या मि नमः ॥ नृ स्वा रु पा नृ र्थ या मि नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 मृ ता धा नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥
 रु प नमः ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥ इति मृ क० ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

۱۵۵۵
 ۱۵۵۶
 ۱۵۵۷
 ۱۵۵۸
 ۱۵۵۹
 ۱۵۶۰
 ۱۵۶۱
 ۱۵۶۲
 ۱۵۶۳
 ۱۵۶۴
 ۱۵۶۵
 ۱۵۶۶
 ۱۵۶۷
 ۱۵۶۸
 ۱۵۶۹
 ۱۵۷۰
 ۱۵۷۱
 ۱۵۷۲
 ۱۵۷۳
 ۱۵۷۴
 ۱۵۷۵
 ۱۵۷۶
 ۱۵۷۷
 ۱۵۷۸
 ۱۵۷۹
 ۱۵۸۰
 ۱۵۸۱
 ۱۵۸۲
 ۱۵۸۳
 ۱۵۸۴
 ۱۵۸۵
 ۱۵۸۶
 ۱۵۸۷
 ۱۵۸۸
 ۱۵۸۹
 ۱۵۹۰
 ۱۵۹۱
 ۱۵۹۲
 ۱۵۹۳
 ۱۵۹۴
 ۱۵۹۵
 ۱۵۹۶
 ۱۵۹۷
 ۱۵۹۸
 ۱۵۹۹
 ۱۶۰۰
 ۱۶۰۱
 ۱۶۰۲
 ۱۶۰۳
 ۱۶۰۴
 ۱۶۰۵
 ۱۶۰۶
 ۱۶۰۷
 ۱۶۰۸
 ۱۶۰۹
 ۱۶۱۰
 ۱۶۱۱
 ۱۶۱۲
 ۱۶۱۳
 ۱۶۱۴
 ۱۶۱۵
 ۱۶۱۶
 ۱۶۱۷
 ۱۶۱۸
 ۱۶۱۹
 ۱۶۲۰
 ۱۶۲۱
 ۱۶۲۲
 ۱۶۲۳
 ۱۶۲۴
 ۱۶۲۵
 ۱۶۲۶
 ۱۶۲۷
 ۱۶۲۸
 ۱۶۲۹
 ۱۶۳۰
 ۱۶۳۱
 ۱۶۳۲
 ۱۶۳۳
 ۱۶۳۴
 ۱۶۳۵
 ۱۶۳۶
 ۱۶۳۷
 ۱۶۳۸
 ۱۶۳۹
 ۱۶۴۰
 ۱۶۴۱
 ۱۶۴۲
 ۱۶۴۳
 ۱۶۴۴
 ۱۶۴۵
 ۱۶۴۶
 ۱۶۴۷
 ۱۶۴۸
 ۱۶۴۹
 ۱۶۵۰
 ۱۶۵۱
 ۱۶۵۲
 ۱۶۵۳
 ۱۶۵۴
 ۱۶۵۵
 ۱۶۵۶
 ۱۶۵۷
 ۱۶۵۸
 ۱۶۵۹
 ۱۶۶۰
 ۱۶۶۱
 ۱۶۶۲
 ۱۶۶۳
 ۱۶۶۴
 ۱۶۶۵
 ۱۶۶۶
 ۱۶۶۷
 ۱۶۶۸
 ۱۶۶۹
 ۱۶۷۰
 ۱۶۷۱
 ۱۶۷۲
 ۱۶۷۳
 ۱۶۷۴
 ۱۶۷۵
 ۱۶۷۶
 ۱۶۷۷
 ۱۶۷۸
 ۱۶۷۹
 ۱۶۸۰
 ۱۶۸۱
 ۱۶۸۲
 ۱۶۸۳
 ۱۶۸۴
 ۱۶۸۵
 ۱۶۸۶
 ۱۶۸۷
 ۱۶۸۸
 ۱۶۸۹
 ۱۶۹۰
 ۱۶۹۱
 ۱۶۹۲
 ۱۶۹۳
 ۱۶۹۴
 ۱۶۹۵
 ۱۶۹۶
 ۱۶۹۷
 ۱۶۹۸
 ۱۶۹۹
 ۱۷۰۰
 ۱۷۰۱
 ۱۷۰۲
 ۱۷۰۳
 ۱۷۰۴
 ۱۷۰۵
 ۱۷۰۶
 ۱۷۰۷
 ۱۷۰۸
 ۱۷۰۹
 ۱۷۱۰
 ۱۷۱۱
 ۱۷۱۲
 ۱۷۱۳
 ۱۷۱۴
 ۱۷۱۵
 ۱۷۱۶
 ۱۷۱۷
 ۱۷۱۸
 ۱۷۱۹
 ۱۷۲۰
 ۱۷۲۱
 ۱۷۲۲
 ۱۷۲۳
 ۱۷۲۴
 ۱۷۲۵
 ۱۷۲۶
 ۱۷۲۷
 ۱۷۲۸
 ۱۷۲۹
 ۱۷۳۰
 ۱۷۳۱
 ۱۷۳۲
 ۱۷۳۳
 ۱۷۳۴
 ۱۷۳۵
 ۱۷۳۶
 ۱۷۳۷
 ۱۷۳۸
 ۱۷۳۹
 ۱۷۴۰
 ۱۷۴۱
 ۱۷۴۲
 ۱۷۴۳
 ۱۷۴۴
 ۱۷۴۵
 ۱۷۴۶
 ۱۷۴۷
 ۱۷۴۸
 ۱۷۴۹
 ۱۷۵۰
 ۱۷۵۱
 ۱۷۵۲
 ۱۷۵۳
 ۱۷۵۴
 ۱۷۵۵
 ۱۷۵۶
 ۱۷۵۷
 ۱۷۵۸
 ۱۷۵۹
 ۱۷۶۰
 ۱۷۶۱
 ۱۷۶۲
 ۱۷۶۳
 ۱۷۶۴
 ۱۷۶۵
 ۱۷۶۶
 ۱۷۶۷
 ۱۷۶۸
 ۱۷۶۹
 ۱۷۷۰
 ۱۷۷۱
 ۱۷۷۲
 ۱۷۷۳
 ۱۷۷۴
 ۱۷۷۵
 ۱۷۷۶
 ۱۷۷۷
 ۱۷۷۸
 ۱۷۷۹
 ۱۷۸۰
 ۱۷۸۱
 ۱۷۸۲
 ۱۷۸۳
 ۱۷۸۴
 ۱۷۸۵
 ۱۷۸۶
 ۱۷۸۷
 ۱۷۸۸
 ۱۷۸۹
 ۱۷۹۰
 ۱۷۹۱
 ۱۷۹۲
 ۱۷۹۳
 ۱۷۹۴
 ۱۷۹۵
 ۱۷۹۶
 ۱۷۹۷
 ۱۷۹۸
 ۱۷۹۹
 ۱۸۰۰
 ۱۸۰۱
 ۱۸۰۲
 ۱۸۰۳
 ۱۸۰۴
 ۱۸۰۵
 ۱۸۰۶
 ۱۸۰۷
 ۱۸۰۸
 ۱۸۰۹
 ۱۸۱۰
 ۱۸۱۱
 ۱۸۱۲
 ۱۸۱۳
 ۱۸۱۴
 ۱۸۱۵
 ۱۸۱۶
 ۱۸۱۷
 ۱۸۱۸
 ۱۸۱۹
 ۱۸۲۰
 ۱۸۲۱
 ۱۸۲۲
 ۱۸۲۳
 ۱۸۲۴
 ۱۸۲۵
 ۱۸۲۶
 ۱۸۲۷
 ۱۸۲۸
 ۱۸۲۹
 ۱۸۳۰
 ۱۸۳۱
 ۱۸۳۲
 ۱۸۳۳
 ۱۸۳۴
 ۱۸۳۵
 ۱۸۳۶
 ۱۸۳۷
 ۱۸۳۸
 ۱۸۳۹
 ۱۸۴۰
 ۱۸۴۱
 ۱۸۴۲
 ۱۸۴۳
 ۱۸۴۴
 ۱۸۴۵
 ۱۸۴۶
 ۱۸۴۷
 ۱۸۴۸
 ۱۸۴۹
 ۱۸۵۰
 ۱۸۵۱
 ۱۸۵۲
 ۱۸۵۳
 ۱۸۵۴
 ۱۸۵۵
 ۱۸۵۶
 ۱۸۵۷
 ۱۸۵۸
 ۱۸۵۹
 ۱۸۶۰
 ۱۸۶۱
 ۱۸۶۲
 ۱۸۶۳
 ۱۸۶۴
 ۱۸۶۵
 ۱۸۶۶
 ۱۸۶۷
 ۱۸۶۸
 ۱۸۶۹

[illegible]



5204 158



५८ ३३३



Wh E E

[illegible]

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मत्वेप्रथयेन ५५५

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

आनेया वै देवी मुलाधार सा कुत्रिका ॥ अनाहते उदे का ओज
 शुद्ध हाट की ओर ॥ १ ॥ सा गि दुरे निरु री च वा कि सा न स
 धु धं जा य द्वा सा य अ मि धौ ना अ नु र्ग र्ग क न अ द्वा ॥ २ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १२ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २२ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २९ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ३० ॥